University Grants Commission, New Delhi Recognized Journal No. 41311
ISSN: Print: 2347-5021 www.research-chronicler.com ISSN: Online: 2347-503X

जवाहरलाल नेहरू का राजनीति में योगदानः एक अध्ययन

डॉ0 शिशिर कुमार

पकड़ी असली, मुजफ्फरपुर

सार संक्षेप

प्रखर वक्ता, महान् लेखक, इतिहासकार, स्वप्नदृष्टा और आधुनिक भारत के निर्माता पंडित जवाहरलाल नेहरू का भारत की राजनीति में अहम योगदान था जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता। आजादी की लड़ाई में अग्रणी भूमिका निभाने के साथ–साथ भारत में लोकतंत्र की बुनियाद मजबूत करने में, भारत के नवनिर्माण में पंडित जवाहरलाल नेहरू ने जो भूमिका निभाई उसके लिए राष्ट्र हमेशा उनकी त्रृणी रहेगा। नेहरू जी को राजनीति विरासत में उनके पिता मोतीलाल नेहरू से मिली थी। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान पंडित नेहरू महात्मा गाँधी के काफी निकट आ गए। वास्तव में महात्मा गॉधी पंडित नेहरू के असली राजनीतिक गुरू थे। बाद में महात्मा गाँधी द्वारा पंडित नेहरू को अपना राजनीतिक उतराधिकारी घोषित कर दिया गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात देश के सामने अनेक समस्याएँ थी जिसे पार पाना आसान नहीं था। टुकड़ों में बँटे भारत वर्ष को एकसूत्र में पिरोना आसान नहीं था। पंडित नेहरू के कुशल नेतृत्व में सरदार वल्लभ भाई पटेल ने 562 देशी रियासतों को भारत में मिलाकर भारत को एक सूत्र में बाँधा और भारत को मौजूदा रूप दिया। स्वतंत्र भारत की सबसे बडी समस्या राष्ट्र निर्माण की चुनौतियाँ थी। जिसका सामना पंडित नेहरू ने आसानी से किया। भुखमरी, बेरोजगारी, अशिक्षा, पुनर्वास इत्यादि अनेक चुनौतियॉ थी जिनका सामना करना आसान नहीं था। भारत में लोकतंत्र को स्थापित करना दुरूह कार्य था जिसे पंडित ने कर दिखाया। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद विश्व समुदाय दो गुटों–पूंजीवादी व साम्यवादी गुटों में बंट चुका था। भारत जैसे तीसरी दुनिया के अनेक ऐसे राष्ट्र थे जो किसी भी गुट में शामिल होने की स्थिति में नही थे। फलतः गुटनिरपेक्ष नीति अस्तित्व में आयी। पंडित नेहरू गुटनिरपेक्ष आंदोलन के अग्रणी नेता थे। गुटनिरपेक्ष आंदोलन की सफलता में पंडित नेहरू का अहम योगदान था। टुकड़ों में बंट चुके जीर्ण शीर्ण भारत को विश्व समुदाय के समक्ष पुनः प्रतिष्ठित करना सबसे बडी चुनौती थी जिसे पंडित नेहरूके चमत्कारिक नेतृत्व ने कर दिखाया गया। इसमें कतई संदेह नहीं है कि पंडित नेहरू ने भारतीय राजनीति को नई दशा एंव दिशा प्रदान की।

मुख्य शब्दः भारत, राजनीति, पंडित नेहरू, स्वतंत्रता, पुनर्स्थापित आदि

अवधारणात्मक व्याख्याः भारतीय राजनीति में पंडित नेहरू उस सितारा के समान हैं जिनकी चमक कभी फीकी नहीं पड़ सकती। 14 नवम्बर 1889 को इलाहाबाद में जन्में पंडित नेहरू की प्रारंभिक शिक्षा अपने घर पर हुई। तत्पश्चात 15 वर्ष की उम्र में व इंग्लैड चले गए और वहीं से उच्च शिक्षा प्राप्त की। 1912 मे वे इंग्लैड से वापस लौटे और सीधे राजनीति से जुड गए। उनके संपूर्ण राजनीतिक जीवन को दो भागों में बॉटा जा सकता है– स्वतंत्रता के पूर्व एवं स्वतंत्रता के पश्चात्।

स्वतंत्रता पूर्व भारतीय राजनीति व पंडित नेहरूः एक संभ्रान्त परिवार में जन्मे पंडित नेहरू ने अपने लिए राजनीति के उस मार्ग को चुना जिस पर चलना सदैव चुनौतिपूर्ण कार्य रहा है। सदियों से गुलामी की जंजीरों में जकड़े देश को एक संपूर्ण प्रभुत्व संपन्न लोकतांत्रिक गणराज्य बनना कितना

कठिन कार्य था इसे हम सिर्फ महसूस कर सकते हैं। किताबों में हम स्वतंत्रता आन्दोलन के इतिहास को अपने शब्दों के माध्यम से व्यक्त करते आये हैं। वर्तमान पीढी शायद उस तकलीफ से रूबरू न हो सके जो तकलीफ स्वतंत्रता सेनानियों ने उठायी थी। भारत के असंख्य स्वतंत्रता सेनानियों ने उठायी थी। भारत के असंख्य स्वतंत्रता सेनानियों में पंडित नेहरू का नाम बड़े आदर सत्कार से लिया जाता है। 1912 से 1962 तक के लम्बे राजनीतिक जीवन में अनेक उतार चढाव से उन्हें रूबरू होना पड़ा। सर्वप्रथम 1912 में उन्होने एक प्रतिनिधि के रूप में बांकीपुर सम्मेलन में भाग लिया। तब से लेकर 1947 तक वे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे।

1912– बांकीपुर सम्मेलन में प्रतिनिधित्व

1919– इलाहाबाद के होमरूल लीग के सचिव बने

1916–महात्मा गाँधी से प्रथम मुलाकात

1920– उतर प्रदेश के प्रतापगढ जिले में पहले किसान मार्च का आयोजन किया।

1920–22– असहयोग आंदोलन में भाग लिया एवं दो बार जेल गये।

1923– अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महासचिव बने।

1929– कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन के अध्यक्ष बने।

1930–35– नमक सत्याग्रह एंव अन्य आंदोलन के कारण कई बार जेल गये।

1940– व्यक्तिगत सत्याग्रह के कारण जेल भेजे गये।

1942– भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया एवं जेल भेजे गये।

1946– चौथी बार कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गये।

1947– देश के प्रथम प्रधनमंत्री के पद को सुशोभित किया।

स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय राजनीति व पंडित नेहरू : एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में भारत का जन्म 15 अगस्त 1947 को हुआ था। विश्व समुदाय में अनेक राष्ट्रों ने गुलामी की व्यथा सहते हुए स्वतंत्रता प्राप्त की है किंतु जिस परिस्थिति में भारत का जन्म हुआ ऐसी परिस्थिति में विश्व के किसी भी राज्य का जन्म नहीं हुआ था। 1947 का वर्ष अभूतपूर्व हिंसा और मानसिक आघात का वर्ष था। एक ओर जहॉ अपार खुशियॉ नसीब हुई थी वहीं दूसरी ओर राष्ट्र अनेक आंतरिक व वाह्य समस्याओं से ग्रसित था। इन समस्याओं का समाधान किये बगैर देश की एकता को बचाना संभव नहीं था। के0 एम0 मुंशी कहना है कि ''भारत को अपनी स्वतंत्रता के लिए बहुत बडी कीमत चुकानी पड़ी।'' 14 अगस्त 1947 को नई दिल्ली में संविधान सभा को सम्बोधित करते हुए पंडित नेहरू ने कहा था– '' जब आधी रात के घंटे बजेंगे, जबकि सारी दुनिया सोती रहेगी उस समय भारत जगकर जीवन और स्वतंत्रता प्राप्त करेगा।'' हुआ भी ऐसा ही किंतु स्वतंत्र भारत के समक्ष अनेक चुनैतियॉ थी जिस पर शीघ्र काबू पाना था। ऐसी कुछ प्रमुख चुनौतियों को निम्नांकित रूप मे बयां किया जा सकता है–

1. राष्ट्रीय एकता व अखंडता को अक्षुण्ण रखना।
2. लोकतंत्र बहाल करने की चुनौति
3. विस्थापन व पुनर्वास
4. अर्थव्यवस्था मजबूत करना
5. कृषि का विकास
6. शिक्षा का स्तर बढाना
7. बेरोजगारी दूर करना
8. देशी रियासतों का विलय करना
9. राज्यों का पुर्नगठन करना
10. भारतीय विदेश नीति का निर्धारण करना।

उपरोक्त चुनौतियों पर काबू पाये बगैर सशक्त राष्ट्र की कल्पना भी संभव नहीं था। इनमें कुछ

ऐसी समस्याएँ थी जिनपर पूर्णतः काबू पा लिया गया। कुछ समस्याएँ ऐसी है जो आज भी समाधान की राह खोज रही है। इसमें कतई संदेह नहीं है कि पंडित नेहरू के समय कई तरीकों से लोकतंत्र मजबूत हुआ और उसमें उनका योगदान काफी अहम रहा।

प्रथम आम चुनाव 1951–52– 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना एक अंग्रेज विद्वान ए ओ हम द्वारा किया गया था। 1885 से 1951–52 तक के लम्बे समय में कांग्रेस पार्टी का प्रभुत्व भारतीय राजनीति में रहा है। स्वतंत्रता आंदोलन में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अविस्मरणीय योगदान था। स्वतंत्रता के पश्चात 1951–52 में हुए प्रथम आम चुनाव में कांग्रेस पार्टी को अभूतपूर्व सफलता मिली। भारतीय राजनीति में पंडित नेहरू एक करिश्माई और लोकप्रिय नेता थे। जब तकवे जीवित रहे कांग्रेस के चुनाव अभियान की सिर्फ अगुआई ही नहीं की वरन् पूरे देश का दौरा कर अपने दल के उम्मीदवारों की जीत सुनिश्चित की। 1952 के प्रथम आम चुनाव में विभिन्न दलों की लोकसभा में स्थिति

1. अखिल भारतीय कांग्रेस – 364
2. निर्दलीय – 37
3. सी पी ई– 16
4. प्रजा सोशलिष्ट पार्टी– 12
5. किसान मजदूर प्रजा पार्टी– 9
6. पीपुल्स डेमोक्रेमिट पफ्रंट– 7
7. गणतंत्र परिषद– 6
8. अखिल भारतीय हिंदू महासभा– 4
9. भारतीय जनसंघ– 3
10. अन्य– 31

कुल सीट – 489

स्पष्ट है कि प्रथम आमचुनाव में कुल 489 सीटों में से अखिल भारतीय कांग्रेस को 364 सीटें प्राप्त हुई यानि कुल सीटों का 74.5 प्रतिशत। यह अपने आप में बडी सफलता थी। इसका एक बडा श्रेय पंडित नेहरू के चमत्कारिक व्यक्तित्व को जाता है। दरअसल महात्मा गाँधी के बाद तत्कालीन भारतीय समाज में पंडित नेहरू की जितनी लोकप्रियता थी उतनी किसी अन्य नेता की नहीं थी। अगामी दो आम चुनावों में कांग्रेस पार्टी की लोकप्रियता शिखर श्रुती रही। 1957 के आमचुनाव में 494 सीटों की तुलना में कांगेस को 371 सीटें प्राप्त हुई। इसी प्रकार 1962 के आमचुनाव में कांग्रेस को 361 सीटें प्राप्त हुई। जबकि कुल सीटों की संख्या 494 थी। इस प्रकार हम देखते है कि प्रथम तीन आमचुनावों में कांग्रेस पार्टी को अपार सफलता मिली। इसी प्रकार पंडित नेहरू की मृत्यु के बाद भारतीय राजनीति में कांग्रेस का वर्चस्व अगामी दस वर्षो तक कायम रहा।

विकास एक बहुआयामी प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत आर्थिक समृद्धि के साथ–साथ सामाजिक संरचना, राष्ट्रीय संस्थानों व नागरिकों की दशा में अत्यधिक परिवर्तन आता है एवं असमानता की कमी आती है। भारत जैसे नवस्वतंत्र राष्ट्र के लिए सबसे अहम चुनौति थी राष्ट्र का समुचित विकास करना। इसके लिए 15 मार्च 1950 को केन्द्रीय सरकार ने योजना आयोग का गठन किया। योजना आयोग ने सोवियत संघ की भांति भारत के विकास के लिए पंचवर्षीय योजना का विकल्प चुना। प्रथम पंचवर्षीय योजना खाद्य संकट से निबटने के लिए कृषि पर मुख्य रूप से बल दिया गया। इसके साथ ही मुद्रास्फीति पर काबू पाने के लिए उच्च प्राथमिका तय की गई थी। स्वतंत्र भारत के प्रारंभिक वर्षों में अनेक योजनाएं आरंभ की गई जिससे देश तरक्की की राह पर अग्रसर हो सके। भाखड़ा–नांगल और हीराकुंड बांध परियोजना सार्वजनिक क्षेत्रके भारी उद्योग जैसे इस्पात–संयंत्र, तेलशोधक कारखाने, विनिर्माता इकाइयाँ तथा रक्षा–उत्पादन आदि का प्रारंभ इसी अवधि के दौरान किया गया। इस अवधि के दौरान परिवहन और संचार के आधारभूत ढांचे में भी काफी इजाफा हुआ।

भारतीय विदेशी नीति के मुख्य शिल्पकार पंडित नेहरू को माना जाता है। उन्होने भारतीय विदेश नीति के तीन आधार बताए– शांति, मित्रता और समानता। तब से लेकर आज तक भारत की विदेश नीति इसी सिद्धांत पर आधारित है। गुटनिरपेक्षता भारतीय विदेश नीति की मुख्य विशेषता रही है। द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति के बाद विश्व समुदाय दो गुटों में बंट चुका था। एक गुट का प्रतिनिधित्व संयुक्त राज्य अमेरिका का रूख था और दूसरे गुट का नेता सोवियत संघ था। इन दोनों गुटों के परस्पर विरोध के कारण शीतयुद्ध उत्पन्न हो गया। इस विषम परिस्थिति में नवस्वतंत्र राष्ट्र भारत के लिए किसी एक खास गुट में शामिल होना संभव नहीं था। फलतः भारत ने एक विवेकपूर्ण मार्ग का चयन किया। परिणामस्वरूप भारत द्वारा गुटनिरपेक्षता की नीति का अनुसरण किया गया। गुटनिरपेक्षता की नीति के माध्यम से भारत ने विरोधी गुटों के बीच सदभावना स्थापित करने का प्रयास प्रारंभ कर दिया। गुटनिरपेक्षता की नीति की सफलता ने पंडित नेहरू की छवि वैश्विक बना दी। भारतीय राजनीति में यह उनका बड़ा योगदान था। व्यक्ति की पहचान राष्ट्र से होती है। भारत को विश्व रंगमंच पर प्रतिष्ठिा की दृष्टि से देखा जाना पंडित नेहरू की चमत्कारिक नेतृत्व का कमाल था। भारत ने चीन के साथ पंचशील समझौता हुआ जिसे विश्व के अनेक राष्ट्रों द्वारा मान्यता प्रदान की गई। 14 दिसम्बर 1959 को UNO की महासभा में उपस्थित 82 देशों ने पंचशील के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया और इस प्रकार पंचशील को संपूर्ण विश्व की मान्यता प्राप्त हो गई। चीनी धोखे के कारण पंचशील नीति आंशिक सफलता प्राप्त कर सकी। दरअसल भारत की सफलता व पंडित नेहरू की लोकप्रियता को चीन सहन नहीं कर सका और उसने भारत को नीचा दिखाने के उद्येश्य से पंचशील समझौते का उल्लंघन कर भारत पर आक्रमण कर दिया। यह देश के लिए एक बडा आघात था। वस्तुतः भारत युद्ध के लिए मानसिक रूप से तैयार नहीं था। नतीजन भारत की पराजय हो गई। इस पराजय के कारण पंडित नेहरू को बड़ा आघात लगा किंतु इस विषम परिस्थिति में भी गुटनिरपेक्षता की नीति पर चलते रहने का ही संकल्प लिया। चीनी आक्रमण के लगभग डेढ साल के भीतर ही पंडित नेहरू का निधन हो गया। उनके निधन के साथ ही भारतीय राजनीति में जो रिक्तता उत्पन्न हुई उसकी भरपाई आज तक नहीं की जा सकी है।

निष्कर्षः पंडित नेहरू भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था के ऐसे शिल्पकार थे जिनका विकल्प न आज है और न ही उनके समय था। भारतीय शासन व्यवस्था का वर्तमान स्वरूप उनकीही महान देन है। पिछले 71 वर्षो में नेहरू की नीतियों को नये नाम और नये स्वरूप देने का काम हर सत्ता व शासक ने किया है। यही नेहरू और भारतीय राजनीति के बीच का रिश्ता है। लम्बी दासता के बाद स्वतंत्र हुए भारत वर्ष में लोकतांत्रिाक मूल्यों को अपनाना व उसे लागू करना आवश्यक था। नव स्वतंत्र राष्ट्रों के साथ अनेक समस्याएँ होती है। भारत भी इसका अपवाद नहीं था। अनेक कठिनाइयों से जूझते हुए भारत मे न केवल लोकतंत्र स्थापित हुआ वरन पूर्णतः सफल भी। इसका बड़ा श्रेय पंडित नेहरू को जाता है क्योंकि वे न केवल भारत के प्रथम प्रधानमंत्री थे बल्कि करोडों भारतीयों के प्रतिनिधि भी। वर्तमान भारत शक्तिशाली भारत में तब्दील हो रहा है। यह उस नींव की इमारत है जिसकी आधारशिला पंडित नेहरू ने रखी थी। भारतीय राजनीति में विपक्ष को बडी प्रतिष्ठा दी जाती है और उनका सम्मान किया जाता है। यह परंपरा पंडित नेहरू के समय से चली आ रही है। अपने घोर (कहर) विरोधियों को भी पूरा सम्मान देना नेहरू जी की विशेषता थी। भारतीय राजनीति में पंडित जवाहरलाल नेहरू का अद्वितीय योगदान है जिसे भुलाया नही जा सकता।

संदर्भः

1. www. Pm India. Gov.in
2. वही
3. राय गॉधीजीः स्वतंत्रता के बाद भारतीय राजनीति, भारती भवन पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, पृ0 सं0– 03
4. वही पृ0 सं0– 2
5. नेहरू जवाहरलालः मेरी कहानी सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली पृ0 सं0–98
6. https: //hi.m.wikipedia.org
7. http: //www.deepwali.com